E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(4): 251-254
Received: 16-08-2020
Accepted: 21-09-2020

डॉ. देवी प्रसाद
सह आचार्य, हिंदी विभाग, एस. एन.के.पी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. देवी प्रसाद
सह आचार्य, हिंदी विभाग, एस. एन.के.पी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

तेजपाल सिंह 'तेज' की साहित्यिक चेतना

डॉ. देवी प्रसाद

सारांश
मान्यता है कि रचना में कल्पना का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस बात से इंकार तो नहीं किया जा सकता परन्तु रचना हमेशा ही कल्पना पर आधारित हो, यह जरूरी नहीं है। तेजपाल सिंह 'तेज' के साहित्य का अनुशीलन करने पर पाते हैं कि उनके गीत, गजल, कविताएं व गद्य रचनाएं कल्पना की देन न होकर यथार्थ से उपजी हैं। तेजपाल सिंह 'तेज' की रचना–प्रक्रिया की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह नित्य प्रति नवीन विषय प्रतिपादित करती चलती है। आधुनिक काल में काव्य का विषय क्षेत्र व्यापक हो गया है। पाश्चात्य सभ्यता का अंधा अनुकरण, समाज के उच्च वर्ग की स्वार्थपरता, धार्मिक मिथ्याचारण, पाखंड, सामाजिक भेदभाव, आर्थिक शोषण, भुखमरी, बेरोजगारी राजनीतिक भ्रष्टाचार, बाल अपराध, यौन कुंठा, हताशा और कुरीतियाँ इत्यादि, जीवन का कोई भी क्षेत्र साहित्य की परिधि से बाहर हो ही नहीं सकता। तेजपाल सिंह 'तेज' ने खेतों और मिलों में काम करने वाले श्रमिक मजदूर, जाति–पाँति और ऊँच–नीच के नाम पर आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक शोषण के शिकार अछूत एवं पिछड़ी जाति के लोगों की समस्याओं का चित्रण बहुत ही प्रभावपूर्ण और यथार्थपरक ढ़ंग से किया है। इनके साहित्य में दलित, पीड़ित, शोषित व्यक्ति की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और जातीय समस्याओं को संवेदना पूर्ण ढंग से चित्रण किया गया है।

कूटशब्द : स्वार्थपरता, मिथ्याचारण, पाखंड, सामाजिक भेदभाव, आर्थिक शोषण, भुखमरी, बेरोजगारी, बेतोल, माफिक, कुलांचें, बेदम, भ्रष्ट–तूलिका, नगमें, नाकाफी, गीत–अगीत, मानी, नाहक, हुक्मराँ, बगावत।

प्रस्तावना
तेजपाल सिंह 'तेज' की रुचि गीत, गजल, कविता में बचपन से ही रही है। साहित्य रचना के प्रति आपकी रूचि का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि बैंकिंग क्षेत्र में सेवा करने और स्वास्थ्य के साथ न देने के बावजूद भी आप गीत, गजल, कविता के साथ–साथ गद्य लेखन में भी सक्रिय हैं। आप काव्य को मन के भावों का प्रवाह मानते हैं। आपका मत है, ''कविता तो मन से फूटती है अर्थात कविता कवि के अंदर की बात है। कविता के प्रभाव को थामना, न थामना जैसे कवि के वश में नहीं होता। यदि लिखना, नहीं लिखना कवि के वश में होता तो विद्रूप समाज के भय से जीवित कविता जन्म ही नहीं ले पाती।'' आप कविता को अपने मन की बात कहने का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए कहते हैं:–

''मन की बात कहे सो कविता,
बे–अंदाज बहे सो कविता।
रोते–रोते भी मुस्कुराए,
गम बेतोल सहे सो कविता।
दुनिया का दुःख–सुख पहचाने,
हर–श्रृंगार गहे सो कविता।
जहर पीकर भी कुलांचे मारे,
तरकश तीर सहे सो कविता।
'तेज' गजल, दोहा, चौपाई,
गीत–अगीत कहे सो कविता।''[1]

तेजपाल सिंह 'तेज' जनता के कवि हैं । वे जनता की आवाज को मुखर करना ही साहित्य का मुख्य उद्देश्य स्वीकार करते हैं । उनके अनुसार कविता केवल मनोरंजन का साधन नहीं है । वे कहते हैं कि कविता का वास्तविक उद्देश्य समाज में चेतना का प्रचार–प्रसार करना होना चाहिए । 'तेज की कविता अपने आस–पास के वातावरण का चित्रण बखूबी करती है । इन्होंने जनसामान्य को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है । बकौल तेजपाल सिंह 'तेज', ''मुझे अपनी रचना के पात्र खोजने के लिए भटकना नहीं पड़ता । हर गली–कूँचे, सड़क और चौराहे पर मेरी रचना के पात्र–विषय आमतौर पर मिल ही जाते हैं।

मैंने केवल इंसानी जज्बातों को महसूस किया और शायराना अंदाज में पाठकों के सामने परोस दिया।" आपका मत है कि गजल, गीत, कविता को किसी खेमे या मठ की आवश्यकता नहीं है।'' यह बात आपकी रचनाओं पर लागू होती है। इसे स्वीकार करते हुए आपने लिखा है, "यूँ शायरी करना अपने–आप में कमाल है, किंतु मैं इस कमाल से परिचित नहीं। मैं पहले ही स्वीकार कर चुका हूँ कि मेरी गजलें किसी मठ देन नहीं है । मेरा मानना है कि किसी भी विषय की परिभाषा व गुण–धर्म देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप प्रायः बदलती रहती है। मेरी गजलों में आम जीवन से उत्पन्न मेरी अनुभूतिया, ध्यथार्थ की फकीराना अंदाज में सहज अभिव्यक्ति है।[2] आप अपनी गजल दिल के मनमाफिक गीत लिखूँगा में इस बात को स्वीकार करते हुए लिखते हैंः–

''दिल के माफिक गीत लिखूँगा,
हार हुई पर जीत लिखूँगा ।
कौन है अपना कौन पराया,
सबको अपना मीत लिखूँगा ।
औरों की हालत पर हँसना,
दुष्टजनों की रीत लिखूँगा।"[3]

कवि अपने आस–पास होने वाली हर घटना के प्रति बहुत ही संवेदनशील होता है । बहुत सी घटनाएँ एसी होती हैं, जो सामान्य मनुष्य को भी उद्वेलित कर देती हैं। उन घटनाओं से रूबरू होने से मनुष्य के मनोमस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। तेजपाल सिंह 'तेज' रचनाकार पर परिवेश के प्रभाव को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि दुख–सुख, आचार–विचार, चेतना–अचेतना ही नहीं मुक्तावस्था भी कविता को जन्म देती है। अनुभूतियों का वह स्तर जहाँ पहूँचकर मनुष्य मानव स्वयं को भूल जाता है और अपनी निजता को लोक–सत्ता में लीन किए रहता है या फिर सत्ता और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध खड़ा हो जाता है, वहाँ विचारवान मानव जैसे कवि हो जाता है। संकुचन समाप्त प्रायः हो जाता है। फिर जैसा मन,वैसे कविता। व्यक्ति यदि मानसिक रूप से धार्मिक है, तो धार्मिक कविता, राजनीतिक हैं, तो राजनीति कविता, किसी का प्रेमी है, तो प्रेमान्ध कविता, उत्पीडित है, तो प्रताड़ना के खिलाफ चीखती–चिल्लाती अथार्त देश, काल और परिस्थिति कविता का को सदैव प्रभावित करती हैं।''[4] उनका यह वक्तव्य उनकी रचना–धर्मिता को उजागर करता है। तेज भी अपने परिवेश के प्रति उदासीन नहीं है। कवि जब देखता है कि चारों और भ्रष्टाचार है, आपाधापी मची हुई है, तो ऐसे समय में वह कह उठता हैः–

''कैसे कोई गीत लिखूँ मैं ?
धरती–धरती धूल उड़ी है,
अंबर–अंबर जंग छिड़ी है,
बारूदी गोलों की लय पर,
कैसे नव संगीत लिखूँ मैं ?
कैसे कोई गीत लिखूँ मैं ?
संसद की बेदम छाती पर,
सत्ता की कलुषित पाती पर,
भ्रष्ट–तूलिका से जीवन में,
कैसे गीत–अगीत लिखूँ मैं ?
कैसे कोई गीत लिखूँ मैं ?''[5]

तेजपाल सिंह 'तेज' ऐसे रचनाकारो में शामिल हैं, जो अपनी रचनाओं के द्वारा समाज को सुंदर और सुखद बनाना चाहते हैं। कविता की समाज सापेक्षता को लेकर तेजपाल सिंह 'तेज' कहते हैं, ष्कविता कवि की अपनी ही बात हो, यह आवश्यक नहीं। कविता अनुभूति अथार्थ एहसास और संवेदना का भी परिणाम भी हो सकती है ।कविता अपने दुख–दर्द से भी प्रणित हो सकती है इससे चेतावनी देना शायद ही तर्कसंगत हो। यह आवश्यकता नहीं कि कवि की अपनी पीड़ा की अनुभूति किसी और को है, किंतु औरों की पीड़ा कवि की पीड़ा हो सकती है। हाँ! यह बात अलग है कि कवि समस्या का समाधान करने में सक्षम न हो,किंतु समस्या के विरोध में आवाज बुलंद कर समस्या के समाधान का मार्ग तो प्रशस्त करता है। तेजपाल सिंह 'तेज' स्वयं तो अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को सुखी बनाने का संदेश देते हैं, साथ ही अन्य रचनाकारों को भी मानव– हितकरी रचना करने की प्रेरित करते हैंः–

''आँखों–आँखों प्रीत लिखा कर,
अधरों–अधरों गीत लिखा कर।
अपने हिस्से हार भली है,
उनके हिस्से जीत लिखा कर।
अपने तो अपने हैं माना,
गैरों को भी मीत लिखा कर।
तेज के नगमें नाकाफी हैं,
सांसो में संगीत लिखा कर।''[6]

जनकवि वही होता है, जो जनता के दुःख–दर्द की बात करे। अपनी कविता के माध्यम से जनता के दुखों को दूर करने के लिए प्रेरित कर। कवि का काम जनता में आशा और विश्वास का संचार करना होता है। असल में कविता मूलतः सभ्यता और संस्कृति की विवेचना है। कविता समाज की पहचान है। समाज में व्याप्त अच्छाइयां और बुराइयां कविता का विषय रही हैं। इस सत्य को नकारना जैसे कविता को नकारना है। कवि–कर्म को लेकर गजलकार तेजपाल सिंह 'तेज' बहुत ही जागरूक हैं। उनका मत है कि कविता केवल शाब्दिक उच्छवास नहीं है। वे कवि को ऐसी कविता लिखने को कहते हैं, जिसका सरोकार जनसामान्य की समस्याओं से होः–

''मानवता के मानी लिखना,
खत में तनिक जवानी लिखना।
धरती के सूखे आँचल पर,
खुशबू–भरी कहानी लिखना।
शब्द अकेले नाकाफी हैं,
कुछ दाना, कुछ पानी लिखना।
खूने दिल से 'तेज' आखिरिश,
दुनिया आनी–जानी लिखना।''[7]

साहित्य का काम केवल सौंदर्य का उद्घाटन या आनंद प्रदान करना ही नहीं है, अपितु कविता में जनचेतना का होना अनिवार्य है। तेजपाल सिंह तेज काव्य का उद्देश्य विद्रूपताओं का चित्रण और मानवता का प्रसार करना मानते हैं। उनके अनुसार साहित्यकार को समाज में होने वाले परिवर्तन और घटना–दुर्घटना के प्रति उदासीन नहीं हिना चाहिए। साहित्यकार को आसपास में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं को अपनी रचनाओं में शामिल करना चाहिए। इसलिए कवि तेजपाल सिंह 'तेज' लिखते हैंः–

''खत में आना–जाना लिख,
गाना और बजाना लिख।
बिना बात मजदूरों को,
नाहक रोज सताना लिख।
प्रीत–रीत अपनेपन का,
अपने नाम खजाना लिख।

धर्म–कर्म के चक्कर में यॉं,
गुजरा एक जमाना लिख।
वक्त के होठों पर 'तेज',
हॅंसना और हॅंसाना लिख।''[8]

साहित्य का उद्देश्य जनसंवेदना का व्यापक प्रसार करना है। यदि साहित्य चेतना का संवाहक न होकर केवल मनोरंजन तक सीमित रहे तो, व्यवसायी और साहित्यकार में कोई अंतर नहीं रह जाता। व्यावसायिकता साहित्य को लील जाती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए तेजपाल सिंह 'तेज' कहते हैं, ''कविता मूलतः सभ्यता और संस्कृति की विवेचना है। कविता की सार्थकता इसी में है कि उसमें रचनात्मकता हो, न हो किंतु कांति बोध जरूर सम्मिलित हो। जिनके लिए कविता बन पड़ी है, उन्हें चलने को, उठने को, अन्याय से निपटने को, खड़ा करने का मार्ग प्रशस्त करे।'' उन्होंने 'जब भी लिखना शहादत लिखना' शीर्षक गजल में अपनी इसी भावना को अभिव्यक्त करते हुए लिखा हैः–

''जब भी लिखना हो सहादत लिखना,
अबकी उल्फत की रवायत लिखना।
जिनकी आंखों में मौत बसी है,
उनकी आंखों में मोहब्बत लिखना।
मेरी दुनिया के हुक्मराँ छोड़ो,
दाल रोटी पर सियासत लिखना।
घुट के जीने से तो बेहतर होगा,
जर्रे–जर्रे में बगावत लिखना।''[9]

तेजपाल सिंह 'तेज' की भाषा बहुत सटीक और सधी हुई है। अपनी बात को बिना किसी लाग लपेट को सीधी भाषा में कहते हैं। उनका मत है कि भाषा अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम भर है। साहित्यकार को भाषा के प्रति सजग अवश्य होना चाहिए परंतु भाषा के मोह में पड़कर वह अपनी रचना को कहीं दुरुह न बना दे, इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। भाषा हमारी अमूल्य थाती है। बिना भाषा के कुछ भी नहीं है। हर व्यक्ति की अपनी भाषा होती है, जिसके माध्यम से वह अपनी बात दूसरे व्यक्ति तक पहूँचाता है, परंतु तेजपाल सिंह तेज का मानना है कि कुछ लोग भाषा में बहुत होशियार हो गए हैं। वे शब्दों को तोड़ते–मरोड़ते रहते हैं। और भाषा का इस्तेमाल अपने स्वार्थ की पूर्ती के लिए करते हैं। ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिए शब्दों का मनचाहा अर्थ निकाल लेते हैं। इनके अनुसार ऐसा आदमी किसी के भी हाथ नहीं आता। राजनेताओं द्वारा समय से समय–समय पर किए जाने वाले वादे भी इसी श्रेणी में आते हैं। तेज का मत है कि न्याय–अन्याय, सत्य–असत्य, हिंसा–अहिंसा कुछ भी भाषा की पकड़ से दूर नहीं है। सब कुछ भाषा पर टिका हैः–

''जब भाषा साथ है
तो समझो जैसे
किसी के हाथ नहीं आता आदमी
यूँ जानिए
सब कुछ भाषा पर टिका है
न्याय–अन्याय
सत्य–असत्य
हिंसा–अहिंसा
कुछ भी भाषा की
पकड़ से दूर नहीं है।''[10]

आम आदमी का दुःख–दर्द तेजपाल सिंह 'तेज' की कविताओं में प्रमुख विषय बनकर उभरा है। इसका कारण यह है कि उन्होंने अपने आसपास जो भी देखा वह सीधा–सीधा अपनी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त कर दिया। उन्होंने कहा है दिल्ली आने के बाद ही समाज भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों, विकृतियों, सामाजिक भेदभाव, राजनीतिक भ्रष्टाचार, गरीब और अमीर तबके के प्रति प्रशासनिक उपेक्षा, जाति–पॉंति और आर्थिक व श्रमिक शोषण, धार्मिक पाखंडवाद जैसी जाने कितनी ही बुराई हैं, जिनसे मेरा साक्षात्कार हुआ। इसलिए आम आदमी का दुःख–दर्द इनकी गजलों और कविताओं में खास विषय बनकर मुखर हो पाया है। आप अपने रचना–प्रक्रिया के संबंध में कहते हैं, ''मुझे यह कहने में तनिक भी हिचक नहीं है कि मेरा समूचा साहित्य चलती–फिरती कार्यशाला की उपज है। मैंने कभी भी कविता के लिए कविता करने की मशक्कत नहीं की। केला बेचती चमेली, सड़क पर झाड़ू बुहारती चंद्रकला, मूंगफली बेचता ननकू, सब्जी बेचती धनिया, मजदूरी करता होरी, बलात्कार की शिकार किशोरी, भ्रष्टाचारी राजनेता, घूसखोर शासन, नंगी–धड़ंगी सभ्यता जैसे विविध विषय ही मेरी रचना के आधार रहे हैं। मेरी गजल हो या फिर कविता प्रायः घटना प्रधान ही रही है। यथार्थ के धरातल से जन्मी है।'' कल्पना आपकी रचनाओं का हिस्सा नहीं रही, यदि कहीं कल्पना दिखती भी है, तो वे संजोग मात्र हैं। आपके रचना के विकास का क्रम सदैव प्रवाहमय रहा है, जिसे रोकना शायद आपके वश में नहीं रहा। आपने लिखा है, ''आए दिन अखबारों की सुर्खियां पढ़कर या फिर गली–चौराहे पर घटित घटनाएं, मुझे आज भी इस तरह व्याकुल करती रहती हैं कि जब तक उन्हें कागज पर उतार लूँ, तब तक मुझे चौन नहीं मिलता। इस प्रकार मेरी रचना प्रक्रिया निर्बाध गति से सदैव गतिमान रहती है।''

कोई भी रचनाकार समय, समाज और परिस्थिति से परे होकर रचना कर ही नहीं सकता। यह संभव ही नहीं लगता, क्योंकि वह जैसा देखता और भोगता है, उसके भीतर और बाहर के घात–प्रतिघात और उन सबसे उबरने की कवायद की छाया उसके मन–मस्तिष्क पर सदैव छाई रहती है। तेजपाल सिंह श्तेजश के गजल संग्रह 'तूफॉं की जद में' का प्रकाशन अगस्त, 2012 में हुआ। इसमें प्रकशित गजलों के सन्दर्भ में तेजपाल सिंह 'तेज' ने लिखा है, ''मेरे प्रस्तुत गजल संग्रह में संकलित अधिकांश गजलें अगस्त 2012 में बीमारी के कारण बिस्तर में पड़े रहने के बाद बनी सोच और शेष जीवन और मौत के संबंधों की गहराई की बानगी भर हैं। सच तो यह है कि इस दौर में मेरे अकेलेपन की साक्षी केवल ये गजलें ही रही हैं। इस बीच मैंने कितने कड़वे, तीखे या फिर मीठे घूँट पिए हैं, कितने आँसू, कितनी मुस्कुराहटें, मेरी आंखों में, मेरे अधरों पर उठी–बैठी हैं, आई–गई हैं। एक गजल ही है, जिसने हर पल कभी लय बनकर, कभी स्वर बनकर, मेरी हर पीड़ा को प्राणवान किया है।''[11] इन्होंने गजल की रचना शैली में कुछ नए प्रयोग भी किए हैं। तेजपाल सिंह तेज गजल को जनचेतना की अनिवार्य शर्त स्वीकार करते हैं। उनकी मान्यता है, ' कि कविता में मीरा, सूरदास या फिर तुलसी के जैसा भक्ति भाव ही पर्याप्त नहीं है, अंबेडकरवादी साहित्य की मान्यताओं के अनुसार यह कविता का एक भ्रामक रूप है। लुभावना और कर्णप्रिय अवश्य है, किंतु समाज की प्रगति में साधक नहीं है। यह एक लीक बनाता है और एक ही लीक पर चलना क्रांति का मार्ग लील जाता है। कविता में भक्ति–भाव होना समाज में व्याप्त विभिन्न मान्यताओं की पहचान है। समर्थ–असमर्थ के बीच खड़ा होना और सामाजिक सद्भावना की दीवार खड़ी करना कविता का काम है। महाराणा प्रताप को भूख–प्यास से उबरने के लिए संयम और विवेक उत्पन्न करना भी कविता की मूल आत्मा है। बात सीधी सपाट हो चक्रधर लक्ष्य से विमुख न हो, यह कविता की मूल आवश्यकता है।

वरिष्ठ साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय ने 3 फरवरी, 1996 के 'राष्ट्रीय सहारा' हिंदी समाचार पत्र में तेजपाल सिंह 'तेज' की गजलों पर टिप्पणी करते हुए लिखा, ''पिछले वर्ष 1995 में दलित

साहित्य के मर्म को छूते हुए तेजपाल सिंह का दृष्टिकोण नाम से गजल संग्रह छपा। तेजपाल सिंह की इन गजलों में जिंदगी के संघर्षों की कड़वाहट मिलती है। साथ ही सामाजिक परिवर्तन की प्यास भी।''[12] इसी संदर्भ में तेजपाल सिंह की रचना–प्रक्रिया को लेकर वरिष्ठ दलित साहित्यकार डॉ. कुसुम वियोगी लिखते हैं, ''हिंदी गजलकारों की परंपरा में एक नया नाम बागी तेवर के धनी तेजपाल सिंह का जुड़ता है, जिनका हाल ही में 'हिंदी ग्रन्थ अकादमी, दिल्ली'' के प्रकाशन सौजन्य से प्रकाशित गजल संग्रह 'दृष्टिकोण' एक नया संवेदनात्मक आक्रोश लेकर आया है। वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक शाहिद सिद्दीकी ने इनकी रचना–धर्मिता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, ''तेजपाल सिंह 'तेज' की गजलों का मुख्य विषय आदमी है। वह आदमी के दुख–दर्द को बहुत शिद्दत से महसूस करते हैं और बहुत खूबसूरती से गजल के पैकर में ढालकर पेश करने का हुनर भी जानते हैं। आज की मशीनी दुनिया में जिस तरह प्रेम, सद्भावना, दया और मेलमिलाप का खून हो रहा है उसे देखकर वह खामोश नहीं कि गजलों के माध्यम से इसके खिलाफ इस तरह आवाज उठाते हैं कि यह हर दर्दमंद इंसान जाती है। इस तरह तेजपाल सिंह 'तेज' की गजलों का संग्रह इंसान का दृष्टिकोण बन जाता है।''[13]

तेजपाल सिंह 'तेज' को लेकर विभिन्न रचनाकारों और विद्वानों ने जो प्रतिक्रियाएं दी हैं, उनके अनुसार तेजपाल सिंह 'तेज' एक ऐसे रचनाकार हैं, जो गजल को एक नया आयाम देते हैं और अपनी रचनाओं के माध्यम से परिवर्तन की उम्मीद जगाते हैं। तेजपाल सिंह तेज ने अपनी रचना–धर्मिता के संबंध में की गई टिप्पणियों को लेकर कहा है, ''मेरी रचना–धर्मिता पर ऐसी प्रतिक्रिया ही मेरी रचना–प्रक्रिया और रचना–धर्मिता के रीढ़ भी हैं और खुलासा भी। मैं जानता हूँ कि अपनी बात के बीच में औरों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं का उल्लेख करना शायद आवश्यक नहीं है, किंतु किसी भी कवि की रचना–प्रक्रिया, रचना–धर्मिता को केवल उसके अपने दृष्टिकोण से ठीक–ठीक नहीं जाना जा सकता। उसे जानने के लिए पाठ के दृष्टिकोण को जानना मुझे नितांत आवश्यक प्रतीत होता है।'' तेज के उक्त कथन के आलोक में रचनाकार के उद्देश्य को निम्नांकित गजल माध्यम से बखूबी समझा जा सकता हैः–

''आह अपनी जो सदा हो निकली,
सारी दुनिया ही खफा हो निकली।
उनके मिलने से भरी महफिल में,
बात मुद्दी की हवा हो निकली।
ऐसे बदला है जमाने का चलन,
खुलके मिलना भी खता हो निकली।
चढ़के सीने से गुजरना उनका,
उनके जीने की अदा हो निकली।
रफ्ता–रफ्ता ही सही जिन्दगी अपनी,
उनके खाते में जमा हो निकली।''[14]

निष्कर्ष

यथोक्त के आलोक में यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि तेजपाल सिंह 'तेज' की रचनाएं मूलतः वंचित, पीड़ित और शोषित वर्ग से जुड़ी समस्याओं को न केवल जोरदार ढंग से उठाती हैं, अपितु उनकी समस्याओं से निपटने हेतु समाज को संगठित होने के लिए प्रेरित भी करती हैं। उनके काव्य में आंदोलन का भाव मुखरित होकर उभरता है। उनका काव्य केवल संवेदना का काव्य न होकर, वेदना का काव्य है। उनके काव्य की कर्मभूमि समाज के अवहेलित और उपेक्षित व्यक्ति की वेदना और सरोकारों को उजागर करते हुए, उनके दुःख–दर्द से जुड़े प्रश्नों के उत्तर तलाशने में संलग्न दिखाई देती हैं। समाज में व्याप्त विकृतियों के बखान के साथ–साथ उनके निवारण और निराकरण के लिए दिशा देने और उनसे निपटने के लिए भाव भूमि की तलाश करती है। दरअसल उनकी कविता समाज के अवहेलित और उपेक्षित व्यक्ति के प्रति केवल संवेदना का ही साहित्य नहीं अपितु उनके हृदय में बसी वेदना उनके साहित्य को जन्म देती है, ऐसा मुझे लगता है।

सन्दर्भ

1. तूफाँ की जद में, मुरली प्रकाशक एवं वितरक, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 15
2. ट्रेफिक जाम है, शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, प्राक्कथन
3. टूट गया भ्रम संबंधों का, समता प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 20
4. वही, प्राक्कथन
5. वही, पृ. सं. 63
6. गुजरा हूँ जिधर से, किताब घर, अंसारी रोड़, नई दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृ. सं. 24
7. ट्रेफिक जाम है, शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 20
8. वही, पृ. सं. 84
9. हादसों के दौर में, संगीता प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 63
10. पुश्तैनी पीड़ा, जागृति प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2009, पृ. सं. 53
11. तूफाँ की जद में, मुरली प्रकाशक एवं वितरक, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, प्राक्कथन
12. 'राष्ट्रीय सहारा' हिंदी समाचार पत्र, 3 फरवरी, 1996
13. दृष्टिकोण, राहुल प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 8
14. ट्रेफिक जाम है, शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 45